पाक्षिक

मूल्य ₹ ५

पाथेय कण

आषाढ कृ.१० युगाब्द ५१२२ वि.२०७७,१६ जून, २०२०

नई सोच के धनी
हमारे सुदर्शन जी

हल्दीघाटी के महासमर में **हिंदुआ सूर्य महाराणा प्रताप** अकबर के सेनापति मानसिंह पर सीधा हमला करते हुए। इस वार में मानसिंह ने हौदे के पीछे छिपकर अपनी जान बचाई और हाथी का महावत मारा गया।

।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।।
संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

**मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन।
राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।**

पाक्षिक
पाथेय कण
आषाढ़ कृ. १०, युगाब्द ५१२२, वि.२०७७
१६ जून २०२०
वर्ष ३६ : अंक ०३

परम सुहृद पाठक-गण,

सप्रेम नमस्कार।

कोरोना संक्रमण तथा २४-२५ मार्च से देशभर में लागू लॉकडाउन के कारण अप्रेल द्वितीय तथा मई के दोनों अंक प्रकाशित नहीं हो पाए। अभी तक पोस्ट आफिस, रेल, ट्रांसपोर्ट की व्यवस्था सुचारु रूप से नहीं चलने के कारण जून (द्वितीय) अंक भी डिजिटल स्वरूप में ही भेजा जा रहा है।

लॉकडाउन में सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशों का पालन कर स्वयं एवं परिवार को सुरक्षित रखें। आपके पत्रों के माध्यम से आपका और हमारा संवाद निरंतर बना रहे, इसी आशा और विश्वास के साथ

जय श्रीराम।

आपका
सम्पादक

सहयोग राशि

□□□ ₹ 1□0/- पन□□□ ₹1□00/-

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)
सम्पर्क : 7976582011, 9414447123,
9929722111

Website: www.patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

चीन का विस्तारवाद

मई की शुरुआत में एक बार फिर चीन ने भारतीय सीमा पर अतिक्रमण किया। यह अतिक्रमण तथा भारत-चीन सैनिकों के बीच हाथापाई लद्दाख क्षेत्र में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर पैगांग त्सो झील और गलवान घाटी के पास के क्षेत्रों में हुई। भारत और चीन के बीच एलएसी ३४८८ किमी है और यहाँ पर प्राकृतिक अवरोधों के कारण सीमांकन की स्थाई व्यवस्था नहीं है। हैरानी की बात है कि चीन आज भी इस एलएसी को मान्यता नहीं देता है। इससे चीन जब चाहे सीमा विवाद खड़ा कर चीनी हित में कुछ मुद्दों से ध्यान हटाने या अन्य मुद्दों पर ध्यान देने के लिए पड़ौसी देशों को चेतावनी के रूप में प्रयोग करता है।

चीन की सीमा विस्तारवादी नीतियाँ केवल भारत तक सीमित नहीं है। चीन दक्षिण-चीन सागर से लेकर दक्षिण एशियाई महाद्वीपीय सीमाओं तक अपना दबदबा बढ़ाने की कोशिशें कर रहा है। ताइवान, वियतनाम, हांगकांग में चीन का बढ़ता दखल विश्व शांति को खतरा है। चीन मानता है कि वह अमरीका को पछाड़कर नई वैश्विक महाशक्ति बन चुका है।

वर्तमान विवाद का कारण भारत द्वारा गलवान घाटी क्षेत्र के पास शिलोक नदी से दौलत बेग ओएसडी तक सड़क निर्माण को लेकर है जो भारतीय सैनिकों तथा उनके साजोसामान को चीनी सीमा तक ले जाने में सहायक होगी। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने सीमा क्षेत्रों में आधारभूत ढांचागत परियोजनाओं के माध्यम से सड़क-रेलमार्ग-पुलों का तेजी से विकास किया है। इन परियोजनाओं के पूरा होने से भारतीय सैनिकों की सीमा निगरानी क्षमता तथा आत्मविश्वास बढ़ा है, भले उनको लेकर चीन आशंकित हो एतराज कर रहा है। चीन सीमा पर अपने क्षेत्र में सड़कों, सैन्य ठिकानों तथा प्रतिरक्षा ढांचे को दशकों से मजबूत कर रहा है जिससे उसकी भारत ही नहीं तिब्बत तक सैनिक पहुँच आसान तथा त्वरित हो। सीमा अतिक्रमण पर भारतीय सैनिकों के प्रतिरोध पर चीन वहां अपना सैन्य बल बढ़ाने के साथ भारी साजो सामान भी जमा कर रहा है। सीमा सुरक्षा के लिए भारत ने भी अपनी सैन्य उपस्थिति, बोफोर्स तोपों सहित भारी सैन्य साजोसामान तथा हेलिकाप्टर-सुखाई विमान सीमा पर पहुँचा चीन को चेतावनी नहीं तो यह संदेश अवश्य दे दिया है कि २०२० का भारत १९५५ या १९६२ वाला भारत नहीं है। १९६० के दशक में चीन तिब्बत को हड़पने के बाद नीचे भारतीय अक्साई →

**सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य य पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।**

हे राजन, सदैव प्रिय भाषण करने वाले आसानी से मिल जाते हैं, किंतु अप्रिय जो हितदायी हो ऐसा भाषण करने वाले वक्ता एवं श्रोता, दोनों ही मिलना दुर्लभ होता है ।

(पंचतंत्र/मित्रसम्प्राप्ति २/१७४)

आगामी पक्ष (१ से १५ जुलाई २०२०) के विशेष अवसर

(आषाढ़ शुक्ल ११ से श्रावण कृष्ण १० तक)

जन्म दिवस

६ जुलाई (१९०१)– डा.श्यामा प्रसाद मुखर्जी जयन्ती, नारी जागरण की अग्रदूत राष्ट्र सेविका समिति की संस्थापिका वन्दनीया लक्ष्मीबाई केलकर(मौसी जी) का जन्म दिवस

श्रावण कृष्ण ९ (इस बार १४ जुलाई)– ८वें गुरु हरिकिशनजी की जयन्ती, (यु. ४७५८, वि.१७१३ सन् १६५६)

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

१ जुलाई (१९६२)– राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन की पुण्यतिथि

३ जुलाई (२००५)– स्वामी रामसुखदास जी की पुण्यतिथि

४ जुलाई(१९०२)– स्वामी विवेकानन्द का बेलूरमठ (कलकत्ता) में स्वर्गवास

७ जुलाई (१७५८)– त्रावणकोर (केरल) के राजा मार्तण्ड वर्मा की पुण्यतिथि

१३ जुलाई (१६६०)– बाजीप्रभु देशपाण्डे का बलिदान

१४ जुलाई (२००३)– संघ के चतुर्थ सरसंघचालक पू. रज्जू भैया की पुण्यतिथि

अन्य

आषाढ़ शुक्ल ११ (इस बार १ जुलाई)– महाराष्ट्र में पंढरपुर यात्रा प्रारम्भ (देवशयनी एकादशी)

३ जुलाई (१९४०)– माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (श्रीगुरुजी) संघ के द्वितीय सरसंघचालक नियुक्त

४ जुलाई (१९४३)– नेताजी सुभाष चन्द्र बोस आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च अधिकारी बने

आषाढ़ पूर्णिमा (इस बार ५ जुलाई)– व्यास (गुरु) पूर्णिमा

१० जुलाई (१९६३)– डा.सूरज प्रकाश द्वारा दिल्ली में 'भारत विकास परिषद' की स्थापना

१२ जुलाई (१९४९)– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर लगा प्रतिबन्ध बिना किसी शर्त के हटाया गया

→ चिन का ४०००० किमी से ज्यादा क्षेत्र हड़प गया, किन्तु तब दिल्ली की सरकार सोती रही। उसे जानकारी तब मिली, जब चीन ने उस क्षेत्र को अपना भू–भाग दिखाते हुए देश का नक्शा प्रकाशित किया। तब भी देश के नेता हिंदी–चीनी भाई–भाई का नारा लगा अपने को अन्तर्राष्ट्रीय नेता समझते रहे।

आज सारा विश्व कोरोना महामारी तथा उसके परिणामस्वरूप बिगड़ी अर्थव्यवस्थाओं को पटरी पर लाने में सारी शक्ति लगा रहा है। विश्व के अधिकांश देश चीन को इस महामारी के कुप्रबंधन तथा समय से जानकारी न देने (वास्तव में जानकारी छिपाने) का दोषी मानता है। कई पश्चिमी देशों की बड़ी कम्पनियां चीन से पलायन करने का मन बना चुकी हैं, जिन्हें भारत में बाजार के साथ–साथ तकनीकी कामगारों की उपलब्धता, सरल कराधान प्रणाली व नीची कर दरें, उद्योग लगाने में सरकार की तरफ से सुविधाएं, बेहतर आधारभूत ढांचा (सड़क, रेल, बिजली) आकर्षित कर रहा है। कोरोना महामारी से वैश्विक बाजार में मंदी की स्थिति है, जिससे चीन की निर्यात आधारित अर्थव्यवस्था बुरी तरह से प्रभावित है। ढाई माह के लाक डाउन ने भारतीय अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ दी है। ऐसे में जहां भारतीय सैनिक सीमा पर डटे हैं, हम नागरिकों का कर्तव्य है कि चीन के इस दुःसाहस का उचित जवाब दें। हम सब यह कर सकते हैं, चीनी उत्पादों का बहिष्कार करके। गत दिनों इन्जीनियर, पर्यावरणविद्, शिक्षासुधारवादी, आविष्कारक, सोनम वांगचुक (जिसके चरित्र पर ''थ्री इडियट'' में आमिर खान थे) का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ जिसमें उन्होंने चीनी उत्पादों का विशेषकर इलेक्ट्रोनिक्स, साफ्टवेयर, मोबाइल एप्लीकेशनों का बहिष्कार कर अपने वालेट द्वारा चीन को सबक सिखाने का आह्वान किया। उन्होंने सभी देशवासियों से एक सप्ताह में चीनी साफ्टवेयर, एप्लीकेशंस तथा एक वर्ष में चीनी हार्डवेयर के स्थान पर भारतीय विकल्प का प्रयोग करने की समय सीमा का सुझाव दिया। उनके इस अभियान को बड़ी संख्या में नामचीन लोगों का समर्थन मिल रहा है।

आज भारत–चीन विदेश व्यापार लगभग ९५ अरब डालर प्रतिवर्ष का है जिसमें चीन का निर्यात भारत के निर्यात से चार गुना से भी ज्यादा है। व्यापार असंतुलन द्वारा परोक्ष रूप से हम भारतीय चीन की तानाशाह सरकार तथा उसके सैन्य बल का पोषण कर रहे हैं जिसका प्रयोग वह हमारी ही सीमा पर अतिक्रमण करने में कर रहा है।

आइए हम सब इस आन्दोलन का हिस्सा बन अपने राष्ट्रीय चरित्र का पालन करें; स्वदेशी अपनाएं, चीनी उत्पादों का बहिष्कार कर भारत को आत्मनिर्भर बनाने में भागीदार बनें; यही समय की मांग है।

जय भारत। ■

नयी सोच के धनी हमारे सुदर्शन जी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पांचवे सरसंघचालक पूज्य कुप्पहल्ली सीतारमैया सुदर्शन नई सोच के धनी थे, जो संघ की परम्पराओं का निर्वाह करते हुए भी शाखा कार्यक्रमों में नवीन प्रयोग लागू करने के लिए जाने जाते हैं। उनका पैत्रिक स्थान कुप्पहल्ली (जिला–हुबली) में कर्नाटक तमिलनाडू की सीमा पर स्थित है। उनका जन्म १८ जून १९३१ को रायपुर (छत्तीसगढ़) में हुआ। उनके पिता श्री सीतारमैया मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़ भी तब उसी राज्य का हिस्सा होता था) के वन विभाग में कार्यरत थे। नौ वर्ष की उम्र में वे संघ के स्वयंसेवक बने।

रायपुर, दमोह, मंडला तथा चन्द्रपुर में प्रारंभिक शिक्षा पाकर उन्होंने जबलपुर (सागर विश्वविद्यालय) से १९५४ में दूरसंचार विषय में बी.ई. की उपाधि ली तथा प्रचारक बन राष्ट्र सेवा में जीवन समर्पित कर दिया। जिला, विभाग प्रचारक का दायित्व निभाने के बाद १९६४ में वे मध्य भारत प्रांत के प्रचारक बनाए गए।

पूज्य सुदर्शन जी ज्ञान के भण्डार, अनेक विषयों एवं भाषाओं के जानकार तथा अद्भुत वक्तृत्व कला के धनी थे। किसी भी समस्या की गहराई तक जाकर समस्या का मूलगामी चिन्तर कर उसका सही समाधान ढूंढ़ निकालना उनकी विशेषता थी। चाहे पंजाब की खालिस्तान समस्या हो या असम घुसपैठ विरोधी आन्दोलन, उन्होंने अपने गहन अध्ययन तथा चिन्तन की स्पष्ट दिशा के कारण इनके निदान हेतु ठोस एवं व्यावहारिक सुझाव दिये। साथ ही कार्यकर्ताओं को उस दिशा में सक्रिय कर आन्दोलन को गलत दिशा में जाने से रोका। पंजाब के बारे में आपकी यह सोच थी कि प्रत्येक केशधारी हिन्दू है और प्रत्येक हिंदू दसों गुरुओं व उनकी पवित्र वाणी के प्रति आस्था रखने के कारण सिख है। इसी प्रकार बांग्लादेश से असम में आने वाला मुसलमान षड़यंत्रकारी घुसपैठिया है, जिसे वापस भेजना ही चाहिए, जबकि वहां से लुट–पिट कर आने वाला हिंदू शरणार्थी है। अतः उसको सहानुभूतिपूर्वक शरण देनी चाहिए। ऐसे ही पूरे देश से नौकरी अथवा व्यवसाय के लिए पूर्वांचल में गए हिंदुओं को घुसपैठिया कह कर उनका तिरस्कार नहीं किया जा सकता। पूज्य सुदर्शन जी के चिन्तन एवं अध्ययन के इन निष्कर्षों को संघ के स्वयंसेवकों, वरिष्ठ अधिकारियों तथा देशभक्त नागरिकों ने बोलना शुरु किया तो पंजाब तथा असम आंदोलन की दिशा बदल गई। आज ये दोनों प्रांत लोकतांत्रिक भारत में अपनी प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं। खालिस्तान आन्दोलन के दिनों में '**राष्ट्रीय सिख संगत**' नामक संगठन की नींव रखी गयी, जो आज भारत ही नहीं, विश्व में बसे केशधारी हिन्दू बंधुओं का एक सशक्त मंच बन चुका है।

पूज्य सुदर्शन जी को संघ–क्षेत्र में जो भी दायित्व दिया गया, उसमें अपनी नव–नवीन सोच के आधार पर उन्होंने नये–नये प्रयोग किये। १९६९ से १९७९ तक उन पर अ.भा.शारीरिक प्रमुख का दायित्व था, इस कार्यकाल में खड्ग, शूल, छुरिका... आदि प्राचीन शस्त्रों के स्थान पर नियुद्ध, आसन, खेल... आदि को संघ शिक्षा वर्गों के पाठ्यक्रम में स्थान मिला। आज तो प्रातः कालीन शाखाओं पर आसन तथा विद्यार्थी शाखाओं पर नियुद्ध एवं खेल का अभ्यास होना एक सामान्य बात हो गयी है। आपातकाल के अपने बन्दीवास में उन्होंने योगचाप (लेजम) पर नये प्रयोग किये तथा उसके स्वरूप को बिल्कुल बदल डाला। योगचाप की लय और ताल के साथ होने वाले संगीतमय व्यायाम से १५ मिनट में ही शरीर का प्रत्येक जोड़ आनन्द एवं नवस्फूर्ति का अनुभव करता था। १९७७ में उनका केन्द्र कोलकाता बनाया गया तथा शारीरिक प्रमुख के साथ–साथ उन पर पूर्वांचल भारत का विशेष दायित्व भी रहा। इस दौरान उन्होंने पूर्वांचल भारत की समस्याओं का गहन अध्ययन करने के साथ–साथ बंगला और असमिया भाषा पर भी अच्छा अधिकार प्राप्त कर लिया।

१९७९ में उन्हें अ.भा.बौद्धिक प्रमुख का दायित्व मिला। आज शाखाओं पर

अंग्रेजों ने अपने साम्राज्यवादी उद्देश्यों के लिए '' आर्य बाहर से आये'', यह गलत सिद्धान्त प्रतिपादित किया। लेकिन इस एक गलत सिद्धान्त से आज कितने विवाद अपने देश में खड़े हैं जो हमारे सामाजिक और राजनीतिक जीवन को विषाक्त कर रहे हैं। उत्तर और दक्षिण का विवाद, आर्य और द्रविड़ का विवाद, सवर्ण और हरिजन का विवाद, ब्राह्मण–अब्राह्मण का विवाद, आदिवासी–गैर आदिवासी विवाद ... ऐसे सब विवाद इस एक गलत सिद्धान्त में सें निकले हुए हैं, वही अब तक पढ़ाये जा रहे हैं। उसके कारण सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में कितना विभाजन, कितना परस्पर का विद्वेष तथा एक–दूसरे के प्रति विषवमन किया जा रहा है, जबकि यह पूरा सिद्धान्त ही गलत है।

–मा.कृप्.सी.सुदर्शन

दैनिक जीवन में श्रीमद्भगवद्गीता का प्रयोग

श्रीमद्भगवद्गीता जीवन की समस्याओं से पार निकलने और प्रमादग्रस्त जनों को जगाने का महामंत्र है। इस बार ईश्वर की कृपा में विश्वास दृढ़ करने के लिये गीता के कुछ अनुभूत प्रयोग दिये जा रहे हैं :-

योमां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।। (गीता ६/३०)

जो मुझे सबमें देखता है और सबकुछ मुझमें देखता है, उसके लिये न तो मैं कभी अदृश्य होता हूँ और न वह मेरे लिए कभी अदृश्य होता है।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।। (गीता ४/११)

हे अर्जुन! जो भक्त जिस भाव से मुझे भजता है, उसी के अनुरुप मैं उसे फल देता हूँ; क्योंकि सभी मनुष्य सब प्रकार से मेरे ही मार्ग का अनुसरण करते हैं।

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः।। (गीता ९/३०)

यदि कोई अतिशय दुराचारी भी अनन्यभाव से मेरा भक्त होकर मुझको भजता है तो वह साधु ही मानने योग्य है; क्योंकि वह अपने संकल्प में अडिग है।

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति।
कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।।(गीता ९/३१)

वह शीघ्र धर्मात्मा बन जाता है और स्थायी शान्ति को प्राप्त होता है। हे कुन्तीपुत्र! तू निश्चयपूर्वक सत्य जान कि मेरे भक्त का कभी नाश नहीं होता है।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।(गीता ९/२६)

यदि कोई भक्ति के साथ मुझे पत्र, पुष्प, फल या जल प्रदान करता है तो उसे मैं स्वीकार करता हूँ।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।। (गीता ९/२२)

जो अनन्यभाव से मुझ परमेश्वर का निरन्तर चिन्तन करते हुए मेरी पूजा करते हैं, उनकी आवश्यकताओं को मैं पूरा करता हूँ और जो उनके पास हैं, उसकी रक्षा करता हूँ।

– ***प्रो.वी.के.अरोड़ा,*** *एम.ए.,पीएचडी*

बौद्धिक विभाग की ओर से होने वाले दैनिक कार्यक्रम (गीत, सुभाषित, अमृतवचन) साप्ताहिक कार्यक्रम (चर्चा, कथा-कथन, प्रार्थना-अभ्यास) मासिक कार्यक्रम (बौद्धिक वर्ग, समाचार-समीक्षा, जिज्ञासा-समाधान, गीत-सुभाषित, एकात्मता-स्तोत्र... आदि की व्याख्या) तथा शाखा के अतिरिक्त समय से होने वाली मासिक श्रेणी बैठक, इन सबको एक सुव्यवस्थित रचना-क्रम १९७९ से १९९० के कालखण्ड में ही मिला। इतना ही नहीं तो शाखाओं पर होने वाले प्रातः स्मरण के स्थान पर नये एकात्मता-स्तोत्र एवं एकात्मता-मंत्र की रचना करवा कर उसे उत्साहपूर्वक प्रचलित भी कराया। १९९० से आपको सहसरकार्यवाह का दायित्व मिला। १० मार्च २००० को पू. रज्जू भैया ने आपको सरसंघचालक का दायित्व सौपा। नौ वर्ष बाद सुदर्शन जी ने इसी प्रकार श्री मोहन भागवत को यह कार्यभार सौप दिया।

देश का बुद्धिजीवी समाज, जो कम्युनिस्ट आन्दोलन की विफलता के कारण वैचारिक संभ्रम में डूबता-उतरता दिखता है, उसकी सोच उनकी प्रेरणा से एवं प्रतिभा को राष्ट्रवाद के प्रवाह की ओर मोड़ने हेतु स्थापित 'प्रज्ञा-प्रवाह' नामक वैचारिक संगठन भी आज देश के बुद्धिजीवियों में लोकप्रिय हो रहा है। अच्छे और देशभक्त मुसलमानों तथा ईसाइयों को साथ लाने के लिए भी उन्होंने कुछ संस्थाएं बनवायीं। संघ-कार्य तथा वैश्विक हिन्दू एकता के प्रयासों की दृष्टि से आपने ब्रिटेन, हालैण्ड, केन्या, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैण्ड, हांगकांग, अमेरिका, कनाडा, त्रिनिडाड, टुबैगो ... आदि देशों का प्रवास भी किया है।

सुदर्शन जी का भारतीय चिकित्सा पद्धतियों आयुर्वेद तथा होम्योपेथी पर बहुत विश्वास था। एक बार भीषण हृदयरोग होने पर चिकित्सकों ने बाइपास सर्जरी कराने को कहा, पर उन्होंने आयुर्वेदिक विधियों से स्वयं को ठीक कर लिया।

दायित्व मुक्ति के बाद भी वे निष्क्रिय नहीं हुए। उन्होंने समाज परिवर्तन के मूलगामी विषयों जैसे गौ संवर्धन, जैविक खेती, पर्यावरण और स्वदेशी समाज रचना, संविधान आदि पर ध्यान दे कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करते रहे। उनका देश भर में प्रवास भी चलता रहा।

पर ध्यान दे कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। उन दिनों अपने केन्द्र भोपाल में वे एक सायं शाखा पर पूरे समय उपस्थित रहते थे। वे बाल स्वयंसेवकों का गण लेते थे तथा उनसे मिलने घरों पर भी जाते थे। यह भी एक संयोग है कि १५ सितम्बर, २०१२ को अपने जन्मस्थान रायपुर में ही प्रातःभ्रमण के बाद प्राणायाम करते हुए हृदयाघात से उनका देहांत हुआ।

राष्ट्र तथा समाज निर्माण के लिए अपना सर्वस्व समर्पण करने वाले पूज्य सुदर्शन जी का जीवन स्वयंसेवकों तथा प्रबुद्ध नागरिकों को सदैव प्रेरणा देता रहेगा। ■

वन्देमातरम् के रचयिता बंकिमचन्द्र चटर्जी

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में वन्देमातरम् नामक जिस महामन्त्र ने उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक जन-जन को उद्वेलित किया, उसके रचियता बंकिम चन्द्र चटर्जी का जन्म ग्राम काँतलपाड़ा (जिला हुगली,बंगाल) में २७ जून, १८३८ को हुआ था। प्राथमिक शिक्षा हुगली में पूर्ण कर उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रेसीडेंसी कालिज से उच्च शिक्षा प्राप्त की। पढ़ाई के साथ-साथ छात्र जीवन से ही उनकी रुचि साहित्य के प्रति भी थी। उन दिनों पाठशालाओं में 'गोड सेव द क्वीन' गीत गाना अंग्रेजों ने अनिवार्य किया हुआ था, जिससे वे आहत थे।

शिक्षा पूर्ण कर उन्होंने प्रशासनिक सेवा की परीक्षा दी और उसमें उत्तीर्ण होकर वे डिप्टी कलेक्टर बन गये। नौकरी के दौरान ही उन्होंने लिखना प्रारम्भ किया। पहले वे अंग्रेजी में लिखते थे। उनका अंग्रेजी उपन्यास 'राजमोहन्स वाइफ' खूब लोकप्रिय हुआ; पर आगे चलकर वे अपनी मातृभाषा बंगला में लिखने लगे।

१८६४ में उनका पहला बंगला उपन्यास 'दुर्गेश नन्दिनी' प्रकाशित हुआ। यह इतना लोकप्रिय हुआ कि इसके पात्रों के नाम पर बंगाल में लोग अपने बच्चों के नाम रखने लगे। इसके बाद १८६६ में 'कपाल कुण्डला' और १८६९ में 'मृणालिनी' उपन्यास प्रकाशित हुए। १८७२ में उन्होंने 'बंग दर्शन' नामक पत्र का सम्पादन भी किया; पर उन्हें अमर स्थान दिलाया 'आनन्द मठ' नामक उपन्यास ने, जो १८८२ में प्रकाशित हुआ।

आनन्द मठ में देश को मातृभूमि मानकर उसकी पूजा करने और उसके लिए तन-मन और धन समर्पित करने वाले युवकों की कथा थी, जो स्वयं को 'सन्तान' कहते थे। इसी उपन्यास में वन्देमातरम् गीत भी समाहित था। इसे गाते हुए वे युवक मातृभूमि के लिए मर मिटते थे। जब यह उपन्यास बाजार में आया, तो वह जन-जन का कण्ठहार बन गया। इसने लोगों के मन में देश के लिए मर मिटने की भावना भर दी।

बंगाल में चले स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान विभिन्न रैलियों में जोश भरने के लिए यह गीत गाया जाने लगा। धीरे-धीरे यह गीत लोगों में अत्यधिक लोकप्रिय हो गया। सन् १८९६ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने यह गीत गाया। सन् १९०१ में कलकत्ता में हुए एक अन्य अधिवेशन में श्री चरणदास ने तथा सन् १९०५ के बनारस अधिवेशन में इस गीत को सरला देवी चौधरानी ने स्वर दिया।

१९०६ में अंग्रेजों ने बंगाल को हिन्दू तथा मुस्लिम आधार पर दो भागों में बाँटने का षड्यन्त्र रचा। इसकी भनक मिलते ही लोगों में क्रोध की लहर दौड़ गयी। ७ अगस्त, १९०६ को कोलकाता के टाउन हाल में एक विशाल सभा हुई, जिसमें यह गीत गाया गया। इसके एक माह बाद ७ सितम्बर को वाराणसी के कांग्रेस अधिवेशन में भी इसे गाया गया। इससे इसकी गूँज पूरे देश में फैल गयी। फिर क्या था, स्वतन्त्रता के लिए होने वाली हर सभा, गोष्ठी और आन्दोलन में वन्देमातरम् का नाद होने लगा। इस गीत से प्रभावित हो लाला लाजपत राय ने लाहौर से जिस जर्नल का प्रकाशन शुरु किया था, उसका नाम ''वन्दे मातरम्'' रखा।

यह देखकर शासन के कान खड़े हो गये। उसने आनन्द मठ और वन्देमातरम् गान पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इसे गाने वालों को सार्वजनिक रूप से कोड़े मारे जाते थे; लेकिन प्रतिबन्धों से भला भावनाओं का ज्वार कभी रुक सका है? अब इसकी गूँज भारत की सीमा पारकर विदेशों में पहुँच गयी। सन् १९०७ में मैडम भीकाजी कामा ने जब जर्मनी के स्टुटगार्ट में तिरंगा फहराया तो उसके मध्य 'वन्देमातरम्' ही लिखा था। क्रान्तिवीरों के लिए यह उपन्यास गीता तथा वन्देमातरम् महामन्त्र बन गया। वे फाँसी पर चढ़ते समय यही गीत गाते थे। इस प्रकार इस गीत ने भारत के स्वाधीनता संग्राम में अतुलनीय योगदान दिया।

बंकिम के प्रायः सभी उपन्यासों में देश और धर्म के संरक्षण पर बल रहता था। उन्होंने विभिन्न विषयों पर लेख, निबन्ध और व्यंग्य भी लिखे। सही मायने में उन्होंने अपनी रचनाओं से प्रबल साहित्यिक आंदोलन छेड़ा जिससे बंगाली पुनर्जागरण हुआ तथा वे शरतचन्द्र तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर से भी ज्यादा लोकप्रिय बने। ८ अप्रेल, १८९४ को उनका देहान्त हो गया।

स्वाधीनता संग्राम में इस गीत की निर्णायक भागीदारी के बावजूद जब राष्ट्रगान के चयन की बात आई, तो वन्देमातरम् के स्थान पर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा लिखे ''जन-गण-मन'' को वरीयता दी गई। इसका कारण था कट्टरपंथी मुसलमानों को 'वन्देमातरम्' गाने में आपत्ति थी कि इस गीत में देवी दुर्गा को राष्ट्र के रूप में देखा गया है। इन लोगों ने आनन्द मठ उपन्यास को भी मुस्लिम विरोधी घोषित कर दिया। कट्टरपंथियों की आपत्तियों के कारण १९३७ में कांग्रेस ने जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति गठित की जिसमें मौलाना अबुल कलाम आजाद भी शामिल थे। इस समिति ने मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए मुस्लिम मत पर मुहर लगा दी कि इस गीत के शुरुआती दो पदों के बाद हिंदू देवी देवताओं की आराधना है। कांग्रेस ने निर्णय लिया कि इस गीत के शुरुआती दो पद ही राष्ट्रगीत में रहेंगे। यह न केवल गीत के रचयिता बल्कि असंख्य स्वतन्त्रता सेनानियों के बलिदान का भी अपमान हुआ। ■

हल्दीघाटी का महासमर

१८ जून, १५७६ को सूर्य प्रतिदिन की भाँति उदित हुआ; पर वह उस दिन कुछ अधिक लाल दिखायी दे रहा था। क्योंकि उस दिन हल्दीघाटी में खून की होली खेली जाने वाली थी। एक ओर लोसिंग में अपने प्रिय चेतक पर सवार हिन्दुआ सूर्य महाराणा प्रताप देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए डटे थे, तो दूसरी ओर नाथद्वारा के पास मोलेला गाँव में मुगलों का पिट्ठू मानसिंह पड़ाव डाले था।

सूर्योदय के तीन घण्टे बाद मानसिंह ने राणा प्रताप की सेना की थाह लेने के लिए अपनी एक टुकड़ी घाटी के मुहाने पर भेजी। यह देखकर राणा प्रताप ने युद्ध प्रारम्भ कर दिया। फिर क्या था; मानसिंह तथा राणा की सेनाएँ परस्पर भिड़ गयीं। लोहे से लोहा बज उठा। खून के फव्वारे छूटने लगे। चारों ओर लाशों के ढेर लग गये। भारतीय वीरों ने हमलावरों के छक्के छुड़ा दिये।

यह देखकर मुगल सेना ने तोपों के मुँह खोल दिये। ऊपर सूरज तप रहा था, तो नीचे तोपें आग उगल रही थीं। प्रताप ने अपने साथियों को ललकारा – साथियो, छीन लो इनकी तोपें। आज विधर्मियों की पूर्ण पराजय तक युद्ध चलेगा। धर्म व मातृभूमि के लिए मरने का अवसर बार-बार नहीं आता। स्वातन्त्रय योद्धा यह सुनकर पूरी ताकत से शत्रुओं पर पिल पड़े।

राणा की आँखें युद्धभूमि में देश और धर्म के द्रोही मानसिंह को ढूँढ रही थीं। वे उससे दो-दो हाथ कर धरती को उसके भार से मुक्त करना चाहते थे। चेतक भी यह समझ रहा था। उसने मानसिंह को एक हाथी पर बैठे देखा, तो वह उधर ही बढ़ गया। पलक झपकते ही उसने हाथी के मस्तक पर अपने दोनों अगले पाँव रख दिये।

राणा प्रताप ने पूरी ताकत से निशाना साधकर अपना भाला फेंका; पर अचानक महावत सामने आ गया। भाले ने उसकी ही बलि ले ली। उधर मानसिंह हौदे में छिप गया। हाथी बिना महावत के ही मैदान छोड़कर भाग गया। भागते हुए उसने अनेक मुगल सैनिकों को जहन्नुम भेज दिया।

मुगल सेना में इससे निराशा फैल गयी। तभी रणभूमि से भागे मानसिंह ने एक चालाकी की। उसकी सेना के सुरक्षित दस्ते ने ढोल नगाड़ों के साथ युद्धभूमि में प्रवेश किया और यह झूठा शोर मचा दिया कि बादशाह अकबर खुद लड़ने आ गये हैं। इससे मुगल सेना के पाँव थम गये। वे दुगने जोश से युद्ध करने लगे।

इधर राणा प्रताप घावों से निढाल हो चुके थे। मानसिंह के बच निकलने का उन्हें बहुत खेद था। उनकी सेना सब ओर से घिर चुकी थी। मुगल सेना संख्याबल में भी तीन-चार गुनी थी। फिर भी वे पूरे दम से लड़ रहे थे।

ऐसे में यह रणनीति बनायी गयी कि पीछे हटते हुए मुगल सेना को पहाड़ियों की ओर खींच लिया जाये। इस पर कार्यवाही प्रारम्भ हो गयी। ऐसे समय में झाला मानसिंह ने आग्रहपूर्वक उनका छत्र और मुकुट स्वयं धारण कर लिया। उन्होंने कहा – महाराज, एक झाला के मरने से कोई अन्तर नहीं आयेगा। यदि आप बच गये, तो कई झाला तैयार हो जायेंगे;पर यदि आप नहीं बचे, तो देश किसके भरोसे विदेशी हमलावरों से युद्ध करेगा ?

छत्र और मुकुट के धोखे में मुगल सेना झाला से ही युद्ध में उलझी रही और राणा प्रताप सुरक्षित निकल गये। मुगलों के हाथ कुछ नहीं आया। इस युद्ध में राणा प्रताप और चेतक के कौशल का जीवन्त वर्णन पण्डित श्यामनारायण पाण्डेय ने अपने काव्य 'हल्दीघाटी' में किया है।

हालांकि मुगल और वामपंथी इतिहासकारों द्वारा हल्दीघाटी के युद्ध में मुगल सेना को विजयी बताया गया है, और दुर्भाग्य से स्वतन्त्रता के बाद स्कूली पाठ्यक्रम में भी यही पढ़ाया जाता है, लेकिन इसके उलट **उदयपुर के राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के मीरा कन्या महाविद्यालय के प्रोफेसर डा.चन्द्रशेखर शर्मा ने एक शोध द्वारा हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय को प्रमाण सहित स्थापित किया है।**

इस शोध में डा. शर्मा ने प्रताप की जीत के पक्ष में ताम्रपत्रों के प्रमाण विश्वविद्यालय में जमा कराए है। डा.शर्मा की खोज के अनुसार युद्ध के बाद अगले एक साल तक महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी के आस-पास के गांवों की जमीन के पट्टे ताम्रपत्र के रूप में बांटे थे, जिन पर एकलिंगनाथजी के दीवान प्रताप के हस्ताक्षर हैं।

उस जमाने में जमीनों के पट्टे जारी करने का अधिकार केवल राजा को ही होता था, जो साबित करता है कि प्रताप ही युद्ध जीते थे। डा.शर्मा ने यह भी शोध किया है कि हल्दीघाटी युद्ध के बाद मुगल सेनापति मानसिंह तथा आसिफ खां के युद्ध में हारने से अकबर नाराज था तथा दोनों को छह महीनों तक दरबार में नहीं आने की सजा दी गई थी। डा.शर्मा कहते हैं कि अगर मुगल सेना जीती होती तो अकबर अपने सेनापतियों को दंडित नहीं करता। **इससे साफ जाहिर है कि महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी के युद्ध को सम्पूर्ण साहस के साथ जीता था।** ■

मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी

भारत में अंग्रेजी सत्ता के आने के साथ ही गाँव–गाँव में उनके विरुद्ध विद्रोह होने लगा; पर व्यक्तिगत या बहुत छोटे स्तर पर होने के कारण इन संघर्षों को सफलता नहीं मिली। अंग्रेजों के विरुद्ध पहला संगठित संग्राम १८५७ में हुआ। इसमें जिन वीरों ने अपने साहस से अंग्रेजी सेनानायकों के दाँत खट्टे किये, उनमें झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम प्रमुख है।

१९ नवम्बर, १८३५ को वाराणसी में जन्मी लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम मनु था। प्यार से लोग उसे मणिकर्णिका तथा छबीली भी कहते थे। इनके पिता श्री मोरोपन्त ताँबे तथा माँ श्रीमती भागीरथी बाई थीं। गुड़ियों से खेलने की अवस्था से ही उसे घुड़सवारी, तीरन्दाजी, तलवार चलाना, युद्ध करना जैसे पुरुषोचित कामों में बहुत आनन्द आता था। नाना साहब पेशवा उसके बचपन के साथियों में थे।

उन दिनों बाल विवाह का प्रचलन था। अतः सात वर्ष की अवस्था में ही मनु का विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधरराव से हो गया। विवाह के बाद वह लक्ष्मीबाई कहलायीं। उनका वैवाहिक जीवन सुखद नहीं रहा। जब वह १८ वर्ष की ही थीं, तब राजा का देहान्त हो गया। युवावस्था के सुख देखने से पूर्व ही रानी विधवा हो गयीं। हालांकि उनके एक पुत्र हुआ था किन्तु जन्म के चार माह में ही उसकी मृत्यु हो गई।

उन दिनों अंग्रेज शासक ऐसी बिना वारिस की जागीरों तथा राज्यों को अपने कब्जे में कर लेते थे। इसी भय से राजा ने मृत्यु से पूर्व ब्रिटिश शासन तथा अपने राज्य के प्रमुख लोगों के सम्मुख अपने भतीजे दामोदर राव को दत्तक पुत्र स्वीकार कर लिया था; पर उनके परलोक सिधारते ही अंग्रेजों की लार टपकने लगी। २७ फरवरी १८५४ को लार्ड डलहौजी ने दामोदर राव को मान्यता झांसी के उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता देने से मना कर झाँसी राज्य को ब्रिटिश शासन में मिलाने की घोषणा कर दी। यह सुनते ही लक्ष्मीबाई सिंहनी के समान गरज उठी – **मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।**

अंग्रेजों ने रानी के ही एक सरदार सदाशिव को आगे कर विद्रोह करा दिया। उसने झाँसी से ५० कि.मी दूर स्थित करोरा किले पर अधिकार कर लिया; पर रानी ने उसे परास्त कर दिया। इसी बीच ओरछा का दीवान नत्थे खाँ झाँसी पर चढ़ आया। उसके पास साठ हजार सेना थी; पर रानी ने अपने शौर्य व पराक्रम से उसे भी दिन में तारे दिखा दिये।

इधर देश में जगह–जगह सेना में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह शुरू हो गये। झाँसी में स्थित सेना में कार्यरत भारतीय सैनिकों ने भी चुन–चुनकर अंग्रेज अधिकारियों को मारना शुरू कर दिया। रानी ने अब राज्य की बागडोर पूरी तरह अपने हाथ में ले ली; पर अंग्रेज उधर नयी गोटियाँ बैठा रहे थे।

जनरल ह्यूरोज ने एक बड़ी सेना लेकर झाँसी पर हमला कर दिया। रानी दामोदर राव को पीठ पर बाँधकर २२ मार्च, १८५८ को युद्धक्षेत्र में उतर गयी। आठ दिन तक युद्ध चलता रहा; पर अंग्रेज आगे नहीं बढ़ सके। नौवें दिन अपने सैनिकों के साथ तात्या टोपे रानी की सहायता को आ गये; पर अंग्रेजों ने भी नयी कुमुक मँगा ली। रानी पीछे हटकर कालपी जा पहुँची। कालपी में महारानी और तात्या टोपे ने अंग्रेजों के विरूद्ध योजना बनाई, जिसमें नाना साहब, शाहगढ़ के राजा, बानपुर के राजा मर्दनसिंह आदि सभी ने रानी का साथ दिया। रानी ने ग्वालियर, जहां का राजा अंग्रेजों का पिट्ठू था, पर आक्रमण कर किले पर अपना अधिकार कर लिया।

ग्वालियर में १८ जून, १८५८ को ब्रिगेडियर स्मिथ के साथ हुए युद्ध में उन्होंने वीरगति पायी। रानी के विश्वासपात्र बाबा गंगादास ने उनका शव अपनी झोंपड़ी में रखकर आग लगा दी। रानी केवल २२ वर्ष और सात महीने ही जीवित रहीं। भारतीय वसुन्धरा को गौरवान्वित करने वाली झांसी की रानी लक्ष्मीबाई वास्तविक अर्थ में आत्मविश्वासी, कर्तव्य परायण, स्वाभिमानी, धर्मनिष्ठ और आदर्श वीरांगना थी। स्वातंत्र्य समर में अपना बलिदान देने वाली इस वीरांगना को शत शत नमन।

ग्वालियर विजय के समय रानी लक्ष्मीबाई धनाभाव से जूझ रही थी तथा कई महीनों से सैनिकों के वेतन और उनके भोजन इत्यादि की समुचित व्यवस्था नहीं कर पा रही थी। इस स्थिति को देखते हुए **बीकानेर के मूल निवासी अमर चंद बांठिया** जो उस समय ग्वालियर रियासत के राज कोषाध्यक्ष थे, ने अपनी जान जोखिम में डाल ग्वालियर रियासत का गंगाजली खजाना उन्हें सुपुर्द किया। उनकी इस सहायता से वीरांगना लक्ष्मीबाई अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने में सफल रही। रानी के बलिदान के ४ दिन बाद श्री बांठिया जी को राजद्रोह के अपराध में उनके निवास स्थान के नजदीक सराफा बाजार में ही नीम के पेड़ पर लटकाकर सार्वजनिक रूप से फाँसी दी गई। राजस्थान के इस सपूत ने स्वातंत्र्य समर में अपना बलिदान दे, राजस्थान का गौरव बढ़ाया। ■

महान क्रांतिकारी रासबिहारी बोस

जिन्हें अंग्रेज पुलिस कभी गिरफ्तार नहीं कर सकी

महान क्रांतिकारी रास बिहारी बोस का जन्म २५ मई १८८१ को हुआ था। पच्चीस वर्ष की आयु में रासबिहारी बोस काम की तलाश में घर से निकल गए। सन १९०६ में उन्होंने देहरादून पहुँचकर वहाँ के वन विभाग के शोध संस्थान में काम करना शुरु किया। वहाँ काम करने का उनका एक उद्देश्य भी था। शोध संस्थान के रसायन विभाग से वे बम बनाने के काम आने वाले रासायनिक पदार्थों को जुटा सकते थे। बोस ने अपने आवास टैगोर-विला में बम निर्माण का काम भी शुरु कर दिया। यहीं उनका सम्पर्क अतुल घोष, हरिपद बोस, शैलेन्द्र बनर्जी और जितेन्द्र मोहन चटर्जी जैसे क्रांतिकारियों से हुआ। जितेन्द्र मोहन चटर्जी का पंजाब के प्रसिद्ध क्रांतिकारियों लालचन्द फलक, सूफी अम्बाप्रसाद, सरदार अजीत सिंह और सरदार किशन सिंह से घनिष्ठ सबन्ध था। रासबिहारी बोस ने भी पंजाब और उत्तर-प्रदेश के क्रांतिकारियों से अपना सपर्क बढ़ाया।

वायसराय पर बम-प्रहार - रासबिहारी बोस का परिवार उस समय फ्रांसीसियों द्वारा अधिकृत चन्द्रनगर में रह रहा था। बोस अपनी माताजी की गंभीर बीमारी का समाचार सुन चन्द्रनगर जा पहुँचे। १९११ में उनकी माताजी का स्वर्गवास हो गया। चन्द्रनगर भी क्रांतिकारियों का गढ़ था। एक दिन चन्द्रनगर के क्रांतिकारियों शिरीषचन्द्र घोष, मोहनलाल राय और अन्य क्रांतिकारियों के साथ श्रीमद्भगवदगीता पर हुई चर्चा के बीच में बोस ने घोषणा की कि, *''मुझे प्रेरणा मिली है कि मैं 'गीता' के संदेश को जीवन में उतारूं। आज से मेरा जीवन देश के लिए समर्पित रहेगा। अब मुझे अपनी हथेली पर सिर रख कर कार्य करते रहना होगा''* ।

इसके पश्चात उन्होंने यह निश्चय किया कि दिल्ली में प्रवेश के समय वायसराय लार्ड हार्डिंग्ज पर बम प्रहार किया जाए। क्रांतिकारियों की योजना के अनुसार २३ दिसबर १९१२ को दिल्ली में वायसराय लार्ड हार्डिंग्ज पर क्रांतिकारी बसन्त विश्वास ने बम फेंककर वायसराय को घायल कर दिया। वायसराय तो बच गया लेकिन पूरा ब्रिटिश साम्राज्य हिल उठा। कुछ समय बाद पुनः चन्द्रनगर पहुँचकर वे क्रांतिकारी ज्योतीन्द्रनाथ मुखर्जी और शचीन्द्रनाथ सान्याल से मिले। वहाँ इन तीनों क्रांतिकारियों ने निश्चय किया कि १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम जैसा ही एक नया संग्राम फिर से लड़ा जाए।

दूसरी सैनिक क्रान्ति की योजना- इस बीच वायसराय पर बम कांड के जिम्मेदार अन्य क्रांतिकारियों के गिरफ्तार हो जाने के पश्चात ब्रिटिश पुलिस ने बोस की गिरफ्तारी के लिए भी वारंट निकाल दिया और भारी इनाम घोषित कर दिया। वे ब्रिटिश पुलिस से बचते हुए पंजाब पहुँचे और गदर पार्टी के सहयोग से सैनिक क्रांति की योजना तैयार की। पूरे देश में सैनिक क्रांति प्रारम्भ करने के लिए रासबिहारी बोस ने २१ फरवरी १९१५ की तिथि तय की। संकेत यह था कि जैसे ही मियाँमीर की छावनी में क्रांति शुरू हो, सभी छावनियों को एक साथ क्रांति यज्ञ में कूद पड़ना चाहिए। सभी क्रांतिवीर २१ फरवरी की प्रतीक्षा करने लगे। लेकिन कृपालसिंह इस दल में गद्दार निकला। उसने रासबिहारी की इस सारी योजना की जानकारी पुलिस को दे दी। लेकिन रासबिहारी एक बार फिर अंग्रेजों को चकमा देते हुए बनारस पहुँच गए।

बनारस से चन्द्रनगर पहुँचकर उन्होंने भारत से बाहर जाने का निश्चय कर लिया। उनके क्रांतिकारी साथियों ने उनके जापान जाने के लिए आवश्यक धन का प्रबन्ध किया और प्रियनाथ ठाकुर के नाम से वे ५ जून १९१५ को जापान पहुँच गए।

जापान के टोकियो में रहने के कुछ दिन बाद ही उन्होंने शंघाई पहुँचकर चीन के क्रांतिकारियों की सहायता से कुछ हथियार भारत भेजने में सफलता प्राप्त की। शंघाई से टोकियो पहुँचकर उन्होंने २७ नवम्बर १९१५ को आयोजित सभा में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध एक आक्रामक भाषण दिया। परिणाम स्वरूप ब्रिटेन के दबाव में जापान की पुलिस ने रासबिहारी बोस की गिरफ्तारी का वारंट निकाल दिया। इस पर वे भूमिगत हो गए। १९१६ से १९२३ तक उन्हें सत्रह बार अपने रहने के स्थान बदलने पड़े। भूमिगत जीवन में वे 'हयाशी इचीरो' के जापानी नाम से रहते थे। सन् १९२३ में बोस को जापान की नागरिकता मिल गई। नागरिकता मिलने के पश्चात उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर १९२४ में टोकियो में भारतीय स्वाधीनता परिषद की स्थापना की। इस परिषद की शाखाएँ दक्षिण-पूर्व एशिया के कई देशों में भी स्थापित की गई।

आजाद हिन्द फौज का गठन - द्वितीय विश्व युद्ध में जापान ने ८ दिसम्बर १९४१ को इंग्लैण्ड और अमेरिका के विरूद्ध युद्ध घोषित कर दिया। रासबिहारी बोस ने तुरन्त जापान का समर्थन किया और जापान के प्रधानमंत्री जनरल तोजो को इस बात के लिए राजी कर लिया कि जापान भारत की आजादी की दिशा में सहयोग दे। इसी के साथ जापान में युद्धबंदी भारतीय सैनिकों से **आजाद हिन्द फौज** की स्थापना की गई। २५ जून १९४२ को आयोजित बैंकाक सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि जर्मनी से नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व संभालने के लिए आमंत्रित किया जाए। उनके आमंत्रण पर नेताजी १६ मई १९४३ को जापान की राजधानी टोकियो पहुँच गए। →

घर-घर में मनाया गया हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव

ज्येष्ठ शुक्ला १३ वि.स.१७३१ को छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना, हिन्दू संस्कृति के पुनरुत्थान और धर्म की पुनर्प्रतिष्ठा का शंखनाद था। हिन्दू समाज के स्वत्व जागरण एवं सबल संगठन की प्रेरणा देने वाले इस दिन को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 'हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव' के रूप में प्रतिवर्ष मनाता है।

वर्तमान काल में कोरोना महामारी के कारण ३० जून तक शाखा स्थान पर सारे कार्यक्रम स्थगित हैं,नित्य शाखा कार्यक्रम तथा प्रार्थना घरों में ही हो रही है। इसी क्रम में संघ ने इस वर्ष इस उत्सव को सप्ताह भर परिवारों के बीच मनाने की योजना बनाकर इसे पूरे हिन्दू समाज का उत्सव बना दिया।

सप्ताह भर के कार्यक्रमों में पूरे परिवार की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए प्रतिदिन किसी एक श्रेणी/आयुवर्ग पर फोकस कर पूरे परिवार को चर्चा, प्रेरक कथा, कहानी का सहभागी बनाने पर जोर रहा। बच्चों के लिए 'मैं शिवा' विषय रख शिवाजी के बाल्यकाल की निडरता, आत्मविश्वासी, संगठनकर्ता, उत्साही बनने की प्रेरणा दी गई। अगले दिन मातृशक्ति (परिवार की माताओं-बहिनों) को संकल्पशक्ति, बच्चों को सुसंस्कार चारित्रिक गुण देने, व्यवस्थाओं में सक्रिय भागीदारी, भविष्य के राष्ट्रीय चरित्र निर्माण में वे कैसे भागीदार हो सकें, माता जीजाबाई के ऐसे जीवन प्रसंगों से परिचय करवाया गया। युवा तरुणों को शिवाजी के तरुण काल के प्रसंगों द्वारा राष्ट्र, धर्म, संस्कृति की पुनर्स्थापना के लिए जीवन की बाजी लगाने से परिचित तथा प्रेरित किया गया।

४ जून को घर घर में ''हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव'' मनाया गया। परिवारों ने शिवाजी महाराज के चित्र पर माल्यार्पण किया, दीपक जलाए, कुछ परिवारों ने दीपमालिका द्वारा इस उत्सव को मनाया। इस अवसर पर स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन करते हुए संघ के उत्तर-पूर्व क्षेत्र के प्रचारक श्री निम्बाराम ने शिवाजी के जन्म से पूर्व काल की निराशा, भय, कायरता, मुगल अत्याचारों की पृष्ठभूमि में जीजामाता का संकल्प, शिवाजी को सुसंस्कारित करना, बालक शिवा की निडरता, संगठन शक्ति, अत्याचारों का प्रतिरोध इत्यादि गुणों के प्रेरक प्रसंगों से चित्रित किया।

हिन्दवी साम्राज्य में शिवाजी ने नीति आधारित सुदृढ़ शासन व्यवस्था स्थापित कर जनता में स्वत्व का भाव तथा आत्मविश्वास जगाया। उनके शासनकाल में कृषि तथा उद्योग धंधों पर ध्यान देकर साम्राज्य को स्वावलम्बी तथा आत्मनिर्भर बनाया गया।

इस सुदृढ़ नीति आधारित शासन व्यवस्था के कारण शिवाजी महाराज की मृत्यु के १०० वर्ष बाद भी मराठों का साम्राज्य बढ़ता ही गया, उनकी प्रेरणा से अनेक हिन्दू राज्य बने। अधिकांश रियासतों के हिन्दू राजा होने से स्वतंत्र भारत का एकीकरण आसान बना।

स्वतंत्र भारत के संविधान में १५वां भाग जो निर्वाचन से संबंधित है, पर शिवाजी तथा गुरु गोविन्द सिंह जी का चित्र है, जो हमें याद दिलाता है कि निर्वाचित नेता में उनके जैसे त्याग और पराक्रम के गुण हों। उन्होंने सभी स्वयंसेवकों से शिवाजी महाराज के पद चिन्हों पर चलते हुए राष्ट्र निर्माण तथा समाज निर्माण में भागीदारी का आह्वान किया।

→ रासबिहारी उस समय सिंगापुर में थे। सिंगापुर से टोकियो जाते समय उन्होंने अपने सैनिक मित्रों से कहा कि मैं आप लोगों के लिए एक अमूल्य उपहार लाने के लिए टोकियो जा रहा हूँ। रासबिहारी बोस नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को लेकर सिंगापुर पहुँच गए। सिंगापुर के कैथे भवन में ४ जुलाई १९४३ के दिन एक समारोह में रासबिहारी बोस ने आजाद हिन्द फौज की बागडोर सुभाषचन्द्र बोस के हाथों में थमा दी।

सर्वोच्च सम्मान - कठोर परिश्रम युक्त जीवन ने रासबिहारी बोस के स्वास्थ्य पर घातक प्रहार किया। बीमार पड़ने पर जनवरी १९४५ में उन्हें उपचार के लिए टोकियो के सरकारी अस्पताल में भर्ती किया गया। बीमारी की स्थिति में ही जापान के सम्राट ने उन्हें जापान के सर्वोच्च सम्मान से विभूषित किया। २१ जनवरी, १९४५ को भारत के इस महान क्रांतिकारी ने निरन्तर आजादी का चिंतन करते हुए टोकियो में अपना शरीर छोड़ दिया। भारत में सैनिक क्रांति की प्रेरणा देने वाले इस अमर सेनानायक के प्रयत्न सफल हुए। आजाद हिन्द फौज के प्रयत्नों के पश्चात १९४६ में नौसेना के जबर्दस्त विरोध के कारण अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा। ■

श्रद्धांजलि

'भंवरजी भाईसा' नहीं रहे

१९२५ में जयपुर जिले की जमवारामगढ़ तहसील के लालीग्राम में जन्में भंवर लाल जी शर्मा का ९५ वर्ष की आयु में गत २९ मई को जयपुर में अपने निवास पर स्वर्गवास हुआ। फौजदारी वकील के नाते उनकी बड़ी प्रसिद्धि थी। संघ के सम्पर्क में आने के बादे मा.दादाभाई गिरिराजजी शास्त्री के मार्गदर्शन में जयपुर नगर में कार्य किया। वे १९५४-५५ में जयपुर नगर के कार्यवाह रहे तथा २००४-०५ में राजस्थान क्षेत्र के सह सम्पर्क प्रमुख रहे। हवामहल क्षेत्र से ६ बार विधायक तथा अनेक विभागों के मंत्री रहे। वे जनसंघ तथा भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष भी रहे। संघ के समर्पित, निष्ठावान, सादगी से परिपूर्ण निरहंकारी स्वयंसेवक के रूप में तथा राजनीति में उनका निष्कलंक जीवन सबको प्रेरणा देता रहेगा। भंवरजी भाईसा को पाथेय कण परिवार की ओर से श्रद्धांजलि एवं शत शत नमन।

जैसा जिसका रोग, वैसी उसकी दवा

एक चिकित्सक रोगियों के प्रति दया भाव व उनकी सेवा के लिए काफी प्रसिद्ध था। एक दिन एक गरीब बीमार व्यक्ति उसके पास आया। चिकित्सक ने उसकी अवस्था देखकर समझ लिया कि इसका सबसे बड़ा रोग पूरा भोजन नहीं मिलना है। चिकित्सक ने उसे अच्छी तरह से खिलाना-पिलाना शुरु किया और कुछ ही दिनों में स्वस्थ होकर वह अपने घर को चला गया।

उसी गरीब आदमी के गांव में एक धनिक रहता था। उसका शरीर काफी भारी-भरकम हो गया था, जिससे उसे चलने में काफी कठिनाई होती थी। उसने सुना कि चिकित्सक रोगियों को खिला पिला कर उनकी खूब सेवा करता है। इसलिए वह भी चिकित्सक के पास दवा कराने के लिए पहुँचा।

चिकित्सक धनिक व्यक्ति का शरीर और उसकी बीमारी देखकर समझ गया कि इसको कोई रोग नहीं है। उपवास कराने से इसकी सारी बीमारियाँ दूर हो जाएंगी। चिकित्सक ने उसे घी-शक्कर और मैदा जैसी चीजें खाना बंद करवाकर उबली हुई तरकारी खिलाना शुरु कर दिया।

चिकित्सक का व्यवहार देखकर धनिक को बड़ा क्रोध आया। उसने चिकित्सक से कहा कि आप गरीबों से प्रेम करते हो उन्हें लड्डू और अच्छे-अच्छे व्यंजन खिलाते हो और मुझे सिर्फ उबली हुई तरकारी; क्या मैं गाय-भैंस हूँ? चिकित्सक ने जवाब दिया- ''मैं तो सभी रोगियों से समान प्रेम करता हूँ। तुम्हारे शरीर का वजन बढ़ गया है इसलिए तुम्हें घी शक्कर खाना मना है। तरकारी खाने से तुम्हारा वजन घटेगा और तुम पुनः स्वस्थ हो पाओगे। मेरा यह काम तुम्हारे साथ प्रेम को प्रकट करता है।

शिक्षा- हमारी खराब आदतों के कारण हमें हितकारी वचन भी पक्षपातपूर्ण प्रतीत होते हैं। ■

बाल प्रश्नोत्तरी

*बाल मित्रों! पाथेय कण के **१६ मार्च** के अंक पर आधारित है। उक्त अंक को आप पढ़ेंगे तो नीचे दिये गये सभी प्रश्नों के उत्तर बड़ी सरलता से दे सकेंगे।*

१. सिलीगुड़ी कॉरीडोर (चिकन नेक) के सबसे संकड़े हिस्से की चौड़ाई (कि.मी.) में है?
(क) १९ (ख) २२ (ग) २५ (घ) २८

२. २००८ में भारत तथा चीन के बीच विवाद का कारण बना डोकलाम किस देश में है?
(क) भारत (ख) नेपाल (ग) चीन (घ) भूटान

३. नेपाली नागरिकों की भारत में बाधा रहित आने-जाने की स्वीकृति देने वाली ''भारत नेपाल मैत्री संधि किस वर्ष हुई थी?
(क) १९४२ (ख) १९४७ (ग) १९५० (घ) १९५१

४. चिकन नेक पर कब्जा कर उत्तर पूर्व को शेष भारत से अलग करने का सपना देखने वाला जेएनयू का पूर्व छात्र है?
(क) शरजील इमाम (ख) कन्हैया कुमार (ग) शेहला रशीद (घ) उमर खालिद

५. सिलिगुड़ी कॉरीडोर से किस देश की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा नहीं लगती है?
(क) भूटान (ख) बांग्लादेश (ग) नेपाल (घ) म्यानमार

६. जलपाईगुड़ी भारत के किस राज्य में है?
(क) प.बंगाल (ख) असम (ग) बिहार (घ) उड़ीसा

७. संघ के संस्थापक डा.केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म हुआ था चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत?
(क) १९४२ (ख) १९४४ (ग) १९४६ (घ) १९४८

८. इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (२५ मार्च) से युगाब्द वर्ष शुरु हुआ?
(क) ५१२१ (ख) ५१२२ (ग) ५१२३ (घ) ५१२४

९. वेदों के उद्धार के लिए भगवान विष्णु का पहला अवतार कौन सा था?
(क) वामन (ख) वराह (ग) कूर्म (घ) मत्स्य

१०. कथा 'जिहाद' में किसने प्राण त्याग दिए किन्तु धर्म नहीं त्यागा?
(क) श्यामा (ख) खजानचंद (ग) धर्मदास (घ) प्रेमचंद

(उत्तर इसी अंक में हैं)

पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं?

बाल मित्रों! यहाँ एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा क रो।

- हिन्दू राष्ट्रवाद की राजनीतिक विचारधारा के प्रखर नायक।
- 'काला-पानी','१८५७ का स्वातंत्रय समर' पुस्तक आपने ही लिखी हैं।
- अन्डमान की सेल्युलर जेल में दो बार आजन्म कारावास की सजा काटने वाले।

(उत्तर इसी अंक में हैं)

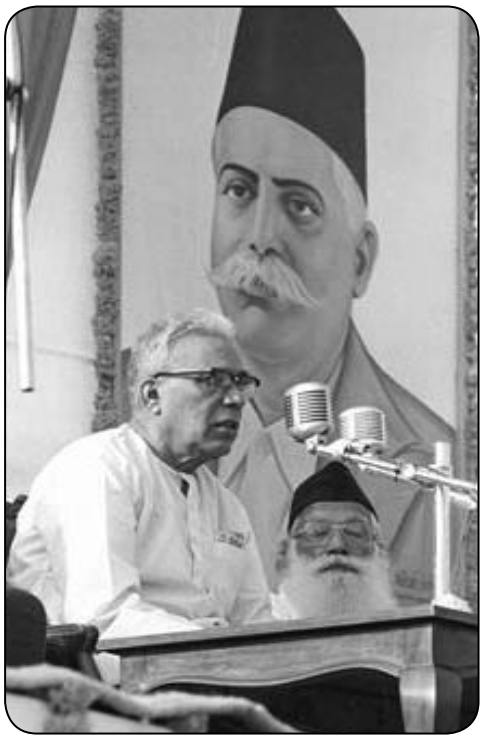

स्वदेशी आन्दोलन पर बाला साहब का संदेश

स्वदेशी अपना कर देश की आर्थिक स्वतंत्रता की रक्षा करें

बीती शताब्दी के आखिरी दशक (१९८९ से १९९९) के प्रारम्भ में गैट (जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड एण्ड टेरिफ) के माध्यम से बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में पैर पसार रहीं थीं। विदेशी कम्पनियों ने देश की अर्थ-व्ववस्था पर शिकंजा कसना प्रारम्भ कर दिया था। आम जनता में भी विदेशी वस्तुओं का आकर्षण काफी बढ़ गया था। इस परिस्थिति में संघ के स्वयंसेवकों ने 'विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी के उपयोग' को बढ़ावा देने के लिये जनवरी १९९२ में स्वदेशी आन्दोलन शुरू किया। इसके पहले चरण के रूप में देश भर में स्वदेशी पखवाड़ा मनाया गया। बाद में निरंतर आन्दोलन चलाने के लिये 'स्वदेशी जागरण मंच' का गठन भी किया गया। गत दिनों प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'वोकल फॉर लोकल' नारे के साथ भारत को आत्मनिर्भर बनाने का आह्वान किया है। प्रस्तुत है, पूज्य बाला साहब देवरस का १२ जनवरी १९९२ से प्रारम्भ होने वाले स्वदेशी पखवाड़ा की पूर्व बेला में प्रसारित संदेश जो आज भी प्रासंगिक है :

इस वर्ष १२ जनवरी से जो कि स्वामी विवेकानन्द जी का जन्मदिवस भी है, देश भर में 'स्वदेशी' का प्रचार व प्रसार करने के लिए ''स्वदेशी जागरण मंच'' के तत्वाधान में स्वदेशी अभियान प्रारंभ हो रहा है। अपने देश को स्वाधीन हुए अब ४५ वर्ष हो रहे हैं, लेकिन कुछ क्षेत्रों में आर्थिक दृष्टि से आज भी हम स्वावलंबी नहीं बन पाये हैं, यह अतीव लज्जास्पद तथा दुखद स्थिति ही कहनी होगी।

स्वदेशी की उदात्त भावना स्वाधीनता संग्राम में अपने सर्वस्व की आहूति देने के लिए नवयुवकों को प्रेरणा देती रही है। लेकिन अब देश स्वतंत्र हो जाने पर इसका देशवासियों को विस्मरण होने के कारण ही आज अपना देश आर्थिक संकटों से घिरा हुआ नजर आ रहा है। इतना ही नही तो अपने देश की आर्थिक स्वाधीनता ही खतरे में पड़ी हुई दिखाई दे रही है।

आज अपने देश में अनेक विदेशी कंपनियां उद्योग, व्यवसाय तथा व्यापार में भी अग्रसर हुई है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां देश की अनमोल साधन संपत्ति का केवल दोहन ही नहीं अपितु शोषण भी कर रही है, साथ ही साथ, सब प्रकार की खुफिया जानकारी भी प्राप्त करती है। ये बहुराष्ट्रीय कंपनियां तथा विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष आदि विदेशी एजेंसियां भारत की अर्थव्यवस्था को पंगु बनाकर अपनी मुट्ठी में रखने के लिए आगे बढ़ रही है। हमें सावधान रहना होगा। ऐसी ही केवल व्यापार करने आयी विदेशी ईस्ट इंडिया कम्पनी ने ही हमें गुलाम बनाया था।

अतः हमें निश्चय करना होगा कि किसी भी विदेशी शक्ति को हम अपने देश के राष्ट्रीय जीवन पर हावी होने नहीं देंगे। हमें इस बात का स्मरण रखना होगा कि देश की स्वाधीनता की लड़ाई लड़ते समय, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, स्वातंत्र्य वीर सावरकर आदि महान नेताओं ने भी 'स्वदेशी' का मंत्र हमें दिया था। स्वदेशी को अपने जीवन में कट्टरता से व्यवहार करने के लिए तथा लोगों में जागृति लाने के लिए 'विदेशी' वस्तुओं की तथा कपड़ों की होली जलायी थी। संघ संस्थापक डॉ.हेडगेवार जी ने उस समय विदेशी वस्तुओं की होली जलाने के कार्यक्रमों में उत्साह से भाग लिया था।

अतः इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सभी स्वयंसेवक तथा संघ परिवार की सभी संस्थाओं व सदस्यगण का 'स्वदेशी जागरण मंच' के इस अभियान में अपनी संपूर्ण शक्ति लगाकर उसे सफल बनाने में सहायता करना उचित है। देश के कोने-कोने में, गांव-गांव जाकर, घर-घर तक पहुँचकर हरेक भारतवासी से संपर्क प्रतिस्थापित करें और उसे विदेशी का बहिष्कार करने तथा स्वदेशी का पुरस्कार करने के लिए आग्रह करें।

मुझे विश्वास है कि आज से देशभर में आरंभ हो रहे इस आर्थिक स्वतंत्रता के संग्राम में हरेक देशवासी अपने सभी जाति-पंथ, भाषा-प्रांत के भेद भुलाकर तथा पक्षाभिनिवेष छोड़कर, आत्मीयता से व उत्साह से सम्मिलित होगा और स्वदेशी जागरण मंच के इस महान अभियान को सफल बनाने में सहायता करेगा। ❐

नागपुर १२ जन.१९९२

छत्रपति का हिन्दवी स्वराज्य

असली पंथ निरपेक्ष एवं आतंकविहीन स्वतंत्र भारत का निर्माण करने का स्वप्न देखने वाले जिन महापुरुषों ने अपने को समर्पित किया था, उन में एक अति महत्वपूर्ण नाम है छत्रपति शिवाजी महाराज का। धूर्त शासकों तथा राजनेताओं के टुकड़ों पर पले इतिहासकारों, लेखकों एवं तथाकथित विद्वानों ने छत्रपति शिवाजी महाराज की छवि कुछ इस प्रकार प्रस्तुत की मानो वे किसी सम्प्रदाय विशेष के नेता थे। वास्तविकता तो यह है कि शिवा जी एक ऐसे कुशल वीर थे जिन के लिए देशभक्ति प्रमुख और कोई अन्य भक्ति गौण थी। सन १६७४ की जयेष्ट शुक्ल त्रयोदशी को रायगढ़ (महाराष्ट्र) में उन का राज्याभिषेक हुआ था। उस दिन को शायद सर्वप्रथम लोकमान्य तिलक ने हिंदू साम्राज्य दिवस समारोह के रूप में मनाने की परम्परा डाली थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस दिन को अपने ६ उत्सवों में से एक उत्सव के रूप में मनाता है। इस सन्दर्भ में माननीय शेषाद्रि जी के द्वारा लिखा एक लेख पाठकों के निवेदन पर प्रकाशित है–

सन् १६७४ में ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ था, जिसे आनंदनाम संवत् का नाम दिया गया। महाराष्ट्र में पांच हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित रायगढ़ किले में एक भव्य समारोह हुआ था। इसके पश्चात् शिवाजी पूर्णरूप से छत्रपति अर्थात् एक प्रखर हिंदू सम्राट के रूप में स्थापित हुए।

महाराष्ट्र में यह दिन शिवा राज्यारोहण उत्सव के रूप में मनाया जाता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इसे हिंदू साम्राज्य दिनोत्सव के रूप में मनाता है। इसका कारण स्पष्ट है। एक किशोर के रूप में शिवाजी ने हिंदवी स्वराज स्थापित करने की प्रतिज्ञा ली थी न कि अपना राज्य स्थापित करने की। उन्होंने इस बात की भी घोषणा की थी कि यह ईश्वर की इच्छा है, इसमें सफलता निश्चित है। उन्होंने अपनी शाही मोहर में यह बात अंकित की थी कि शाहजी के पुत्र शिवाजी की यह शुभ राजमुद्रा शुक्ल पक्ष के प्रथम दिवस के चंद्रमा की भांति विकसित होगी और समस्त संसार इसका मंगलगान करेगा।

यहां तक कि राज्याभिषेक के समय भी समारोह का विशिष्ट हिंदू चरित्र साफ उभरकर सामने आया था। तमिलनाडु से एक प्रतिभाशाली किशोर कवि जयराम शिवाजी की काव्य प्रशस्ति गाने के लिए आया तो एक प्रसिद्ध वैदिक विद्वान गंगा भट्ट काशी से चलकर आए। उन्होंने शिवाजी को एक संप्रभु हिंदू राजा के रूप में प्रतिष्ठापित करने के लिए एक नए आध्यात्मिक भाष्य की रचना की। देश भर से सात पवित्र नदियों का जल शिवाजी के मंगल स्नान के लिए लाया गया।

इससे पूर्व जब शिवाजी औरंगजेब से भेंट करने आगरा गए थे तब जाति, भाषा, पांथिक प्रथाओं की परवाह न करते हुए समस्त जनता उनके सम्मान के लिए रास्ते में एकत्र हो गई। अमानवीय मुस्लिम शासन के तहत पिस रही हिंदू जनता ने स्पष्ट रूप से उन्हें एक नई आशा की किरण के रूप में देखा।

शिवाजी को परास्त करने के लिए औरंगजेब के सेनापति के रूप में दक्षिण आए राजस्थान के राजा जयसिंह को उन्होंने एक लंबा पत्र लिखा था। इस पत्र में शिवाजी ने जयसिंह को हिंदुस्थान को मुस्लिम युग से मुक्त करवाने में प्रमुख भूमिका स्वीकार करने की अपील की थी और स्वयं उनके कनिष्ठ सहयोगी के रूप में साथ देने की बात कही थी। पर जयसिंह के ऊपर मुगलों का प्रभाव इस कदर हावी था कि उन्होंने शिवाजी की राष्ट्रभक्ति की अपील को अनसुना कर दिया।

बाद में बुंदेलखंड (अब वर्तमान मध्य प्रदेश में) के राजा छत्रसाल स्वराज के लिए शिवाजी के झंडे तले लड़ने के लिए आए। पर शिवाजी ने उन्हें वापस भेजकर, वहीं एक शक्तिशाली हिंदू शक्ति के निर्माण की सलाह दी, जिससे हिन्दू शक्ति का मुस्लिम प्रभुत्व पर चहुंओर से आक्रमण हो सके।

शिवाजी के उत्तराधिकारियों के रूप में पेशवाओं ने भगवा ध्वज को काबुल तक फहरा दिया और अंततः मुगल सत्ता, जो कि अनेक शताब्दियों तक चुनौतीहीन रही थी, को पूर्ण रूप से विनष्ट कर दिया। उन्होंने छत्रपति शिवाजी के जीवन–लक्ष्य को सही रूप में समझा था।

एक बार स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि श्री राम और श्री कृष्ण के समान शिवाजी धर्म की स्थापना के लिए जन्म लेने वाले एक आदर्श हिंदू राजा थे।

और आखिर में शिवाजी के राज्याभिषेक के भव्य समारोह का क्या महत्व था? पहला, इसने सभी को भारत के हिंदू चरित्र और एक नए राज्य के उद्देश्य से परिचित करवाया। उससे भी महत्वपूर्ण, उस समय तक कई हिंदू सरदार राजा थे– उन्हें किसी मुस्लिम सम्राट ने ही यह उपाधि प्रदान की थी। यहां तक शिवाजी के पराक्रमी पिता भी एक ऐसे ही सरदार थे। मेवाड़ और बुंदेलखंड को छोड़कर कोई भी अपनी ताकत के बूते राजा नहीं था। →

जन्म शताब्दी वर्ष (१९२०-२०२०) पर विशेष

आपातकाल के वास्तविक नायक ठेंगड़ी जी

श्री दत्तोपंत जी ठेंगड़ी जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत दिये जा रहे प्रसंगों की शृंखला में इस बार डॉ.सुब्रमण्यम स्वामी, सांसद तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री का आपातकाल में ठेंगड़ी जी की भूमिका पर अनुभव कथन प्रस्तुत है।

मैंने दत्तोपंत जी को भूमिगत रह कर आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए देखा है। वह फरवरी १९७६ से लोकसंघर्ष समिति के अध्यक्ष रहे। मैं राज्यसभा से पलायन के उपरान्त १० अगस्त से २० नवम्बर १९७६ तक भारत में ही था और इस अवधि में मुम्बई तथा पुणे में मेरी दत्तोपंत जी से अनेक भेंट वार्ताएं हुईं। हमारे आस पास कई राजनेता धीरे-धीरे पीछे हट रहे थे किन्तु हम सबके मध्य दत्तोपंत जी चट्टान की भाँति डटे हुए थे। उनमें जरा सी भी डगमगाहट नहीं आई। इसीलिए वह मेरे प्रेरणास्रोत थे। मेरे कई निकटस्थ मित्रों का जब मुझ पर इस बात का भारी दबाव था कि मैं आपात्काल के विरूद्ध संघर्ष में अपने को पृथक कर लूँ और इंन्दिरा गांधी को नाराज न करूँ तब यह दत्तोपंत जी (और माधवराव मुले जी) ही थे जिन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया और संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। यहाँ तक कि दत्तोपंत जी ने मेरी

धर्मपत्नी जिसे पुलिस बुरी तरह मानसिक यातना दे रही थी को अत्यन्त सहानुभूति भरा पत्र लिखा जिससे पता चलता है कि दत्तोपंत जी किस प्रकार सबका ध्यान रखते थे और पारिवारिक बारीकियों व भावनाओं को किस कदर गइराई से जानते थे।

यह किसी आन्दोलन में ही समझ आता है कि कौन आदमी और कौन लड़के अथवा कौन भेड़ और कौन बकरी है।

मेरी दृष्टि में आपात्काल के वास्तविक महानायक दत्तोपंत जी हैं। किन्तु फिर वही बात कि उनके आत्मविलोपी स्वभाव और प्रचार से दूर रहने के कारण उनकी आपात्काल हटवाने और देश में पुनः लोकतन्त्र स्थापना में देश को कितनी बड़ी देन है इससे देशवासी आज भी अनभिज्ञ हैं। लोगबाग मुझे आपात्काल के नायक के रूप में जानते हैं पहचानते हैं किन्तु मुझे यहाँ यह स्पष्ट करने दें कि दत्तोपंत जी और माधवराव मुले जी, वह दो महापुरुष थे जिन्होंने मुझे मनोवैज्ञानिक तथा मानसिक रूप से संघर्ष की भूमिका के लिए सन्नद्ध किया। ■

→ यहां तक कि इन दोनों के पास भी भारत भर में हिंदू राज्य स्थापित करने की दृष्टि नहीं थी। शिवाजी का प्रसंग तो बिल्कुल भिन्न था। बीजापुर के सुल्तान के तहत एक छोटे राजा के रूप में उन्होंने दक्षिण में मुगलों के ठिकानों पर आक्रमण करके दिल्ली के सिंहासन को चुनौती दी थी। वे उन प्रारंभिक शासकों में से एक थे जिन्होंने समुद्री युद्ध की सर्वोच्च महत्ता को समझते हुए पश्चिमी तट पर दुर्गों का निर्माण किया और समुद्री जहाजों का प्रयोग किया। उन्होंने मतान्तरण के आसन्न खतरों को भांपते हुए अंग्रेज मिशनरियों को चेतावनी दी और आदेशों की अवहेलना करने पर उनमें से चार को मृत्युदंड दिया। उनके पुत्र संभाजी और बाद के सेनापतियों ने शिवाजी की परंपरा को कायम रखा और पश्चिमी तट पर अंग्रेजों और पुर्तगालियों के वर्चस्व को समाप्त करने के अथक प्रयत्न किए।

शिवाजी के किसी अन्य कार्य से अधिक, उनकी मृत्यु के बाद हुई घटनाओं और अविश्वसनीय रूप से संभाजी के बर्बरतापूर्ण बलिदान ने उस दृष्टि और उद्देश्य को उजागर किया था, जो शिवाजी ने अपनी विरासत के तौर पर छोड़ा था। शिवाजी के न रहने पर औरंगजेब स्वयं उनके राज्य पर चढ़ आया और उसे रौंद डाला। पर शीघ्र ही समूचा क्षेत्र मानो दावानल बन गया। प्रत्येक घर एक किला और शारीरिक रूप से योग्य हर युवा हिंदवी स्वराज का सैनिक बन गया था।

अप्रतिम वीरता और छापामार पद्धति के नए सेनापति सामने आए, जिन्होंने शत्रुओं की सेना पर जोरदार हमले किए। उनमें से एक धनाजी तो औरंगजेब के शाही तंबू तक जा पहुंचा था, पर दुर्भाग्य से औरंगजेब वहां नहीं था। धनाजी उसके शाही तंबू का स्वर्ण चिन्ह लेकर लौटा था। अपनी विशाल सेना और सभी पारंगत योद्धाओं के बावजूद औरंगजेब को चार वर्ष तक चले लंबे संघर्ष में आखिरकार स्वराज की धूल खानी पड़ी और उसकी कब्र दक्षिण में औरंगाबाद, जिसका नाम अब संभाजी नगर रख दिया गया है, में ही बनी। उसके साथ ही मुगलों के उत्कर्ष और उनकी ताकत का भी अंत हो गया। और इस तरह स्वराज के चढ़ते सूरज के साथ भगवा प्रभात का आगमन हुआ। ■

हिन्दुत्व के सेवक गोपाल भाई आशर

पूर्वोत्तर भारत में विश्व हिन्दू परिषद के एक प्रमुख स्तम्भ श्री गोपाल भाई आशर का जन्म २० नवम्बर, १९२८ को कोलकाता में श्री दामोदर भाई आशर के घर में हुआ था। वे मूलतः गुजरात के लोहाना राजपूत वंश से सम्बन्ध रखते थे।

छात्र जीवन में ही वे संघ के स्वयंसेवक बने। बी.ए. तक की शिक्षा पूर्ण कर घरेलू आवश्यकता के लिए उन्होंने भाई-भतीजों के साथ व्यापार तो किया; पर गृहस्थी नहीं बसाई, जिससे सामाजिक कार्यों को सदा प्राथमिकता दी जा सके। कुछ वर्ष वे 'भारतीय जनसंघ' में भी सक्रिय रहे। जब पूर्वोत्तर में वि.हि.प. का काम प्रारम्भ हुआ, तो वे उससे जुड़ गये और फिर सदा इसी में लगे रहे।

अंग्रेजों ने षड्यन्त्रपूर्वक पूर्वोत्तर के लोगों को हिन्दू धर्म और भारत से अलगाव के पाठ पढ़ाये। देश-विदेश के हजारों पादरी और नन आज भी वहां कार्यरत हैं। १९७७ में आपातकाल की समाप्ति के बाद संघ ने भी वहां अनेक विद्यालय, छात्रावास, चिकित्सालय, प्रशिक्षण केन्द्र, मंदिर आदि सेवा केन्द्र प्रारम्भ किये।

इनके संचालन के लिए कई युवा, गृहस्थ तथा वानप्रस्थी कार्यकर्ता पूरा समय देने लगे। उन्हें जीवनयापन के लिए मानदेय तथा मार्गव्यय दिया जाता था। इससे धीरे-धीरे वहां का वातावरण बदलने लगा।

पर इन कार्यों में बहुत धन खर्च होता था। इसके लिए सब कार्यकर्ताओं को कोलकाता, गोहाटी तथा कटक के हिन्दू व्यापारियों के पास आना पड़ता था। धन एकत्र करना आसान नहीं है; पर गोपाल भाई इसके लिए सदा तैयार रहते थे।

उनका कोलकाता में मोटर के कलपुर्जों का कारोबार था। वे लम्बे समय तक 'कोलकाता मोटर पार्ट्स संघ' के अध्यक्ष तथा 'अखिल भारतीय मोटर डीलर्स संघ' के सचिव रहे। देश भर के व्यापारियों से सम्पर्क का उपयोग वे सेवा प्रकल्पों के लिए धन जुटाने में करते थे।

उनकी सादगी, वार्ता की प्रभावपूर्ण शैली तथा निःस्वार्थ सेवा से प्रभावित होकर अनेक व्यापारी इनमें सहयोग देने लगे। बंगाल के अनेक बुद्धिजीवी तथा सन्तों ने भी इन कार्यों को समर्थन दिया।

श्रीराम शिला पूजन कार्यक्रमों में बंगाल के वामपंथी शासन ने गांवों में गुंडों और पुलिसकर्मियों के द्वारा अनेक बाधाएं डालीं। कार्यकर्ताओं की इच्छा थी कि कोलकाता में समापन कार्यक्रम अति भव्य हो; पर शासन ने अनुमति नहीं दी।

अंततः गोपाल भाई के मत तथा हिन्दू शक्ति पर विश्वास करके श्रीराम शिलाओं की शोभायात्रा निकालने का निर्णय हुआ। यह सूचना फैलते ही नगर और गांवों से हिन्दू उमड़ पड़े और ८०,००० लोगों के साथ ऐतिहासिक शोभायात्रा सम्पन्न हुई। इसका बंगाल के वातावरण पर बहुत निर्णायक प्रभाव हुआ।

वि.हि.प. के सेवा प्रमुख श्री सीताराम अग्रवाल, श्री अरविन्द भट्टाचार्य और श्री गोपाल भाई ने पूर्वोत्तर के पहाड़ों में हजारों कि.मी पैदल चलकर ईसाई मिशनरियों के षड्यन्त्रों को देखा और अपने सेवा कार्य खड़े किये। खड़गपुर के पास 'गोपाली आश्रम' की स्थापना में भी गोपाल भाई की प्रमुख भूमिका रही, जो आज पूर्वोत्तर भारत की सभी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र है।

गोपाल भाई वि.हि.प. में केन्द्रीय प्रबन्ध समिति तथा प्रन्यासी मंडल के सदस्य थे। २००७ में अनेक जटिल रोगों से घिर जाने से उनकी सक्रियता बहुत कम हो गयी। इस पर भी वे सदा परिषद के बारे में ही सोचते रहते थे। वे स्वस्थ होकर कई नये प्रकल्प प्रारम्भ करना चाहते थे; पर प्रभु की इच्छा के अनुसार २२ जून, २०१० को कोलकाता में उनका शरीर शांत हो गया। ■

जन्म दिवस पर शत-शत नमन

हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार करने वाले प्रथम तिलस्मी लेखक
बाबू देवकीनन्दन खत्री
१८ जून

(१८६१-१९१३)

आजादी की लड़ाई में धमाका करने वाले प्रथम क्रांतिकारी
दामोदर पंत चाफेकर
२४ जून

(१८६९-१८९८)

बंगाल के प्रख्यात उपन्यासकार वन्देमातरम् के रचनाकार
बंकिम चन्द्र चटर्जी
२७ जून

(१८३८-१८९४)

काकोरी काण्ड के प्रमुख अभियुक्त क्रांतिकारी
राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी
२९ जून

(१९०९-१९२७)

दिल्ली दंगों की चार्जशीट न्यायालय में पेश

दिल्ली के उत्तरपूर्वी जिले में इस वर्ष २४-२५ फरवरी को हुए दंगों के मामले में गत ३ जून केा दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने दो आरोप पत्र दायर किए हैं। इसमें एक मामला आई.बी.अधिकारी अंकित शर्मा हत्याकांण्ड का है, जिसमें आप पार्टी के पार्षद ताहिर हुसैन को मुख्य आरोपी बनाया गया है। वहीं दूसरा मामला ''राजधानी स्कूल'' से जुड़ा है, जिसमें ताहिर हुसैन के साथ स्कूल मालिक फैसल फारूख को आरोपी बनाया गया है। इस मामले की जांच में फारुख के खिलाफ दंगे की साजिश, आगजनी और भीड़ को उकसाने के सबूत मिले हैं। काल डिटेल की पड़ताल से फारूख के सम्बन्ध पापुलर फ्रंट ऑफ इन्डिया, पिंजरा तोड़ समूह, जामिया कोआर्डिनेशना कमेटी, हजरत निजामुद्दीन मरकज और देवबंद सहित कुछ अन्य मौलवियों और मुस्लिम समुदाय के प्रमुख सदस्यों के साथ लगातार बातचीत, साजिश की गइराई को दर्शाता है। फैसल फारुख ने दंगे से एक दिन पहले देवबंद का दौरा भी किया था। आरोप है कि उसने देवबंद से दंगाई बुलाकर स्कूल में ठहराए और उनसे आगजनी पथराव आदि करवाया। दंगे के दौरान वह लगातार मरकज प्रमुख मौलाना साद से बात कर रहा था।

इस मामले में जेएनयू की छात्रा नताशा नरवाल और देवांगना कालिता को भी आरोपी बनाया गया है, जिनका संबंध ''पिंजरा तोड़ संगठन'' से है। जाफराबाद मेट्रो स्टेशन के पास दंगे की साजिश में दोनों शामिल थीं। इसके अलावा उमर खालिद (टुकड़े-टुकड़े गैंग में कन्हैया कुमार का साथी) द्वारा बनाए गए ग्रुप ''इंडिया अंगेस्ट हेट'' समूह में भी दोनों सक्रिय थीं। एक आरोपित के वाट्सअप चेट में कुछ मेसेज मिले हैं जिसमें दंगे के दौरान मुस्लिम महिलाओं को क्या करना है बताया गया था।

फारुख के पास एक हजार करोड़ रुपए की सम्पत्ति जांच में सामने आई है। उसके पिता दिल्ली पुलिस में एसआई थे, जो कि पूर्व में ही बर्खास्त कर दिए गए थे। फारुख के पास अचानक (विशेषकर पिछले एक वर्ष में) अकूत संपत्ति कहां से आई, यह भी अपने आप में जांच का विषय है। एक अनुमान के अनुसार इन देंगों के लिए एक करोड़ से अधिक रुपए खर्च किए गए, जिसमें ५३ लोगों की हत्या तथा अरबों रुपए की सम्पत्ति नष्ट हुई।

जम्मू कश्मीर में बड़ा आतंकी हमला विफल

सुरक्षा बलों ने गत २४ मई को आतंकियों की पुलवामा कांड दोहराने की साजिश को नाकाम बना बड़ी तबाही को टाल दिया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ४५ किलो विस्फोट से लेस एक सेंट्रो कार (जम्मू-कश्मीर) से पुलवामा में किसी बड़े सैन्य प्रतिष्ठान या जम्मू-कश्मीर हाइवे पर सुरक्षा बलों के काफिले पर आत्मघाती हमले की योजना बनाई थी, लेकिन सुरक्षा बलों ने राजपोरा (पुलवामा) में कार बम को सुरक्षित तरीके से नष्ट किया। विस्फोटक लदी इस कार को हिजबुल आतंकी आदिल चला रहा था, जो मौके से भाग निकला।

इस हमले की साजिश जैश, लश्कर और हिजबुल ने रची थी। इस कार में आईईडी फिट करने का शक जैश आतंकी मूसा उर्फ वलीद उर्फ इद्रीस तथा जैश कमांडर अब्दुल रहमान उर्फ फौजी भाई पर बताया जाता है। आतंकियों के निशाने पर सीआरपीएफ के लगभग ४०० जवानों व अधिकारियों का काफिला था, जो २० वाहनों में श्रीनगर से जम्मू के लिए निकलने वाला था।

३ जून को आतंकवादियों के साथ कंगन (पुलवामा) में हुई मुठभेड़ में अब्दुल रहमान उर्फ फौजी भाई अपने दो स्थानीय साथियों जाहिद बट और मंजूर के साथ मारा गया। मुल्तान (पाकिस्तान) का रहने वाला अब्दुल रहमान आईईडी विशेषज्ञ था। उसने अफगानिस्तान में अमरीकी फौजों से लड़ने के बाद नवम्बर २०१७ में पाकिस्तान द्वारा कश्मीर में तबाही मचाने के लिए भेजा गया था।

उत्तर : बाल प्रश्नोत्तरी - १.(ख) २.(घ) ३.(ग) ४.(क) ५.(घ) ६.(क) ७.(ग) ८.(ख) ९.(घ) १०.(ख) उत्तर : महापुरुष पहचानो - वीर सावरकर

२५५० विदेशी जमातियों पर भारत प्रवेश पर १० वर्ष का प्रतिबंध

टूरिस्ट वीजा पर भारत आकर तबलीगी जमात के धार्मिक जलसों में शामिल होने वाले २५५० विदेशी नागरिकों पर केंन्द्र सरकार ने कार्यवाही करते हुए इनके भारत आने पर १० वर्ष के लिए प्रतिबंध लगा दिया है। इन नागरिकों ने जमात की गतिविधियों में भाग लेकर टूरिस्ट वीजा नियमों का उल्लंघन किया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार ब्लेकलिस्ट किए गए विदेशियों में माली,श्रीलंका, केन्या, जिबूती, तंजानिया, दक्षिण अफ्रीका, म्यांमार, थाइलैण्ड, बांग्लादेश, यूनाइटेड किंगडम (ओआईसी कार्ड धारक), आस्ट्रेलिया और नेपाल के नागरिक हैं।

निजामुद्दीन मरकज का मामला उजागर होने के बाद तबलीगी जमात के देश के अन्य मरकजों में भी विदेश से आए लोगों का पता चला था। तेलंगाना से लेकर उत्तर प्रदेश- बिहार और झारखंड तक सभी राज्यों में मस्जिदों से बड़ी संख्या में विदेशी पकड़े गए। इस साल जनवरी से मार्च तक भारत के अलग अलग शहरों में तबलीगी गतिविधियों में हिस्सा लेने के लिए दो हजार से ज्यादा विदेशी टूरिस्ट वीजा पर आए।

पाकिस्तान में आतंकी सलाहुद्दीन पर हमला, आईएसआई पर शक

पाकिस्तान नें आतंकी संगठन हिजबुल मुजाहिदीन के मुखिया सैयद सलाहुद्दीन पर गत २५ मई को इस्लामाबाद में हिजबुल ठिकाने के पास अज्ञात लोगों द्वारा जानलेवा हमला किया गया है। इस हमले में गंभीर रूप से घायल आतंकी प्रमुख को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

माना जा रहा है कि सलाहुद्दीन पर यह हमला पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई ने करवाया, जिसका उद्देश्य सलाहुद्दीन को भयभीत करना है। उल्लेखनीय है कि आईएसआई दशकों से उसका इस्तेमाल भारत विरोधी गतिविधियों के लिए कर रहा है।

मूल रुप से जम्मू-कश्मीर के बड़गांव का रहने वाला मुहम्मद युसूफ शाह उर्फ सैयद सलाहुद्दीन दशकों पहले पाकिस्तान भाग गया था। वह १९९० से पहले कश्मीर में कांग्रेस का बड़ा नेता था जिसने १९८७ में कांग्रेस के टिकट पर विधानसभा का चुनाव भी लड़ा था।

सलाहुद्दीन यूनाइटेड जिहाद काउंसिल नामक पाकिस्तान समर्थक आतंकवादी समूहों के गठबंधन का प्रमुख भी है जिसे अमरीका ने वैश्विक आतंकवादी घोषित किया है।

हरीश साल्वे का गैर निर्वाचित लोगों पर निशाना

जाने माने वकील हरीश साल्वे ने गत २९ मई को एक वेबिनार में आरोप लगाया कि बहुत से ऐसे लोग जो निर्वाचित प्रतिनिधि नहीं हैं, उन्हें लगता है कि वे अदालतों के माध्यम से अपनी इच्छा सरकार पर थोप सकते हैं। उन्होंने कहा कि अदालत का कोई निर्णय किसी राजनीतिक दल का पक्ष लेना है या न्यायाधीश ने राजनीतिक दल का पक्ष लिया है, गलत है। साल्वे ने कहा कि कुछ लोगों को राहत के लिए सुप्रीम कोर्ट पहुंचने की आदत है। जब सुप्रीम कोर्ट से राहत नहीं मिलती है, तो वे कहते हैं कि जज इस वजह से ऐसा नहीं कर रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि कांग्रेस शासनकाल में सरकार के ऊपर राष्ट्रीय एकता परिषद काम करती थी जिसमें चुने हुए जन प्रतिनिधियों के अलावा सेकुलर-वामपंथी बुद्धिजीवी गठजोड़ के पत्रकार, वकील तथाकथित समाजसेवी सरकार को निर्देश देते थे। ऊँची पहुँच के ये लोग सरकारी विभागों के कामकाज में हस्तक्षेप कर, अपने तथा अपनों के उचित-अनुचित काम इन सरकारी विभागों से करवाने में सफल होते थे। किन्तु मोदी सरकार के समय ये सब बेरोजगार हो गए हैं। सरकार से अपने मन मुताबिक काम नहीं करा सकने की भड़ास में ये लोग अब सरकार विरोधी प्रेस कांफ्रेंस करके अथवा न्यायालयों में जनहित याचिकाएं दायर कर सुर्खियों में बने रहने का प्रयास करते हैं।

बांग्लादेशी आतंकी अब्दुल करीम मुर्शिदाबाद (प. बंगाल) से गिरफ्तार

कोलकाता पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स ने गुरुवार रात्रि को बांग्लादेश जमात-उल-मुजाहिदीन के वांछित आतंकी अब्दुल करीम को मुर्शिदाबाद के सती पुलिस थाने से गिरफ्तार कर लिया है। जनवरी २०१८ में बिहार के बोधगया में हुए बम धमाकों के पीछे इस आतंकी संगठन का हाथ था। इसलिए अब्दुल करीम का पकड़ा जाना पुलिस की बड़ी कामयाबी है। यह संगठन भारत में आतंकी गतिविधियों के लिए स्थानीय लोगों में कट्टरपंथी भावनाएं भरने, उकसाने और उनकी भर्ती करने में लिप्त पाया गया है। इसलिए पिछले साल केन्द्र सरकार ने जमात-उल-मुजाहिदीन बांग्लादेश को प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन घोषित किया था।

मेघालय के राज्यपाल ने कहा-

भारत से प.बंगाल को अलग करने की हो रही साजिश

मेघालय के राज्यपाल तथागत रॉय ने गत ३ जून को अपने ट्वीट में दावा किया कि प.बंगाल को भारत से अलग करने की साजिश रची जा रही है।

उन्होंने ''बांग्ला पक्ष'' नाम से एक संगठन का जिक्र करते हुए कहा कि इस संगठन ने ट्विटर, फेसबुक, इन्सटाग्राम और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्म तथा बंगाल में रहने वाले हिंदी भाषियों के खिलाफ भेदभावपूर्ण तथा नफरत भरे पोस्ट करना शुरु किया है। लाखों लोग इसके समर्थक हैं और हिंदी भाषियों के खिलाफ तेजी से नफरत फैलाई जा रही है ताकि प.बंगाल से हिंदी भाषियों को भगाया जा सके। इस पेज पर कई ऐसे पोस्ट किए गए हैं जिसमें बताया गया है कि बांग्लादेश के रहने वाले लोग हिंदी भाषियों से ज्यादा घनिष्ठ हैं। इनका अंतिम लक्ष्य प.बंगाल को भारत से अलग कर बांग्लादेश से मिलाना है। इन लोगों पर लगाम लगाना जाना जरूरी है।

बांग्ला अस्मिता के नाम पर बांग्लादेशी घुसपैठियों को शरण देने वाली ममता सरकार से ज्यादा अपेक्षा नहीं है। फिर भी संवैधानिक पद पर होने से उन्हें राष्ट्रद्रोही गतिविधियों में संलग्न ऐसे संगठनों पर बिना देरी किए ठोस कार्रवाई होनी चाहिए।

राष्ट्रोन्नायक आचार्य शंकर ३१

आलेख व चित्र
ब्रजराज राजावत

आचार्य के शिष्य मंडल में अब चार प्रमुख शिष्य थे– पद्मपाद, सुरेश्वर, हस्तामलक और त्रोटक...। शृंगेरी पीठ की तरह ही आचार्य भारत की चारों दिशाओं में ऐसी पीठ स्थापित कर हिन्दु धर्म के पुनर्गठन व पुनरुत्थान को स्थायित्व देना चाहते थे।

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
१६ जून, २०२०

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. ४८७६०/८७ अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /२०२/२०१८-२० JAIPUR CITY/ WPP - ०१/२०१८-२०

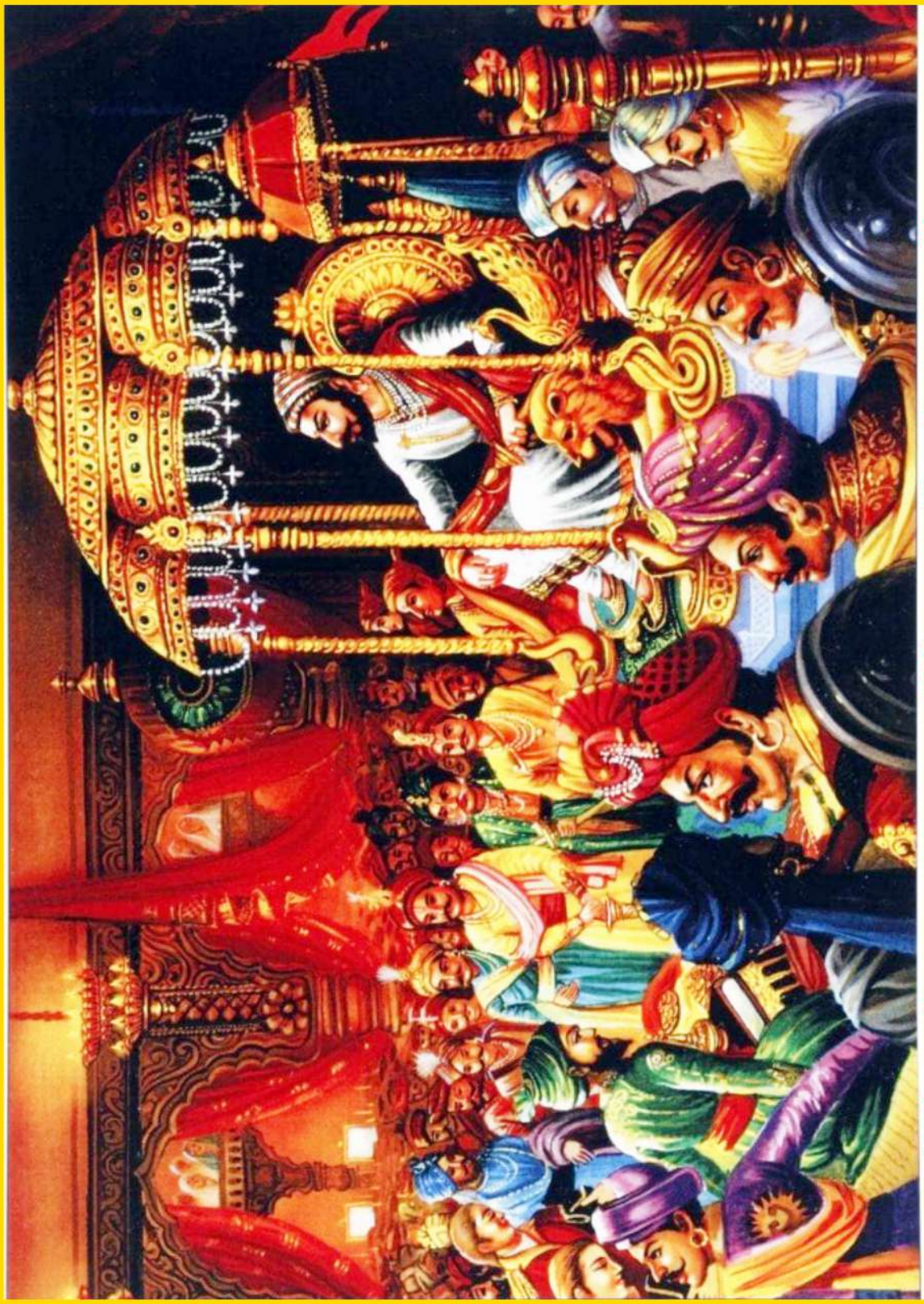

छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक तथा हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना

(ज्येष्ठ शुक्ल १३, विक्रमी संवत १७३१, दिनांक ६ जून १६७४)

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-१०,२२ गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, ४, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-३०२०१७
सम्पादकः मेघराज खत्री
प्रेषण दिनांक १६,१७,१८,१९ व २० जून २०२० आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,

_____

_____

_____